Peer Reviewed Journal

ISSN 2319-8648

Impact Factor (SJIF)

Impact Factor - 7.139

Current Global Reviewer

International Peer Reviewed Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

Special Issue 20 Vol. II
on

भारतीय समाज और विकलांग (दिव्यांग) विमर्श

Indian Society & Ideology of Disability

October 2019

Associate Editor
Dr. Shivaji Wadchkar

Guest Editor
Principal Dr. V.D. Satpute

Assistant Editor
Dr. V.B. Kulkarni
Dr. A.K. Jadhav
Dr. S.A. Tengse

www.publishjournal.co.in

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue XX , Vol. II | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Octomber 2019 | SJIF | Impact Factor : 7.139

Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

SPECIAL ISSUE – 20 Vol II

Title of the issue **भारतीय समाज और विकलांग (दिव्यांग) विमर्श**

Indian Society & Ideology of Disability

© All rights reserved with the College & publisher Price : Rs. 400/-

PUBLISHED BY

Editor – Arun Godam

Latur

Guest Editor

Principal Dr. V.D. Satpute

Associate Editor

Dr. Shivaji Wadchkar

Assistant Editor

Dr. V.B. Kulkarni, Dr. A.K. Jadhav, Dr. S.A. Tengse

PRINTED BY

Shaurya Publication

Old MIDC , Near Kirti Gold Chowk, Latur

Email- hitechresearch11@gmail.com

EDITION :

Oct. 2019

महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. वसंतजी सातपुते इस संगोष्ठी को पूरा करने में जिनका अथक परिश्रम एवं अमूल्य योगदान रहा है, वह मेरी सहयोगी डॉ. वनिता कुलकर्णी, डॉ. अशोक जाधव महाविद्यालय के सभी प्राध्यापक, कार्यालयीन कर्मचारी एवं छात्रों के बिना संगोष्ठी के सफल आयोजन का काम पूरा हो ही नही सकता था। हम उनके सक्रिय सहयोग के लिए उन्हे तहे दिल से शुक्रगुजार है।

संगोष्ठी में सम्मीलित सभी शोधकर्ता, प्रतिभागी अध्यापक एवं छात्राएँ, इस शोधालेख कृती को शीघ्र प्रकाशित करने के लिए जिन्होने अभूतपूर्व योगदान दिया उनके प्रति प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ।

अब जैसी भी हो यह स्मारिका आपके हाथ है। लगता है शोध कार्य करनेवाले शोधार्थी, अध्यापकों को लाभान्वित करेगी।

सधन्यवाद ...

सहसंपादक
डॉ. वनिता कुलकर्णी
डॉ. अशोक जाधव

संपादक
डॉ. शिवाजी वडचकर

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth

	प्रा.डॉ.भारती नकुलराव कांबळे	78
18.	दया प्रकाश सिन्हा का सीढियाँ नाटक में व्यक्त अंध खालू के विशेष सन्दर्भ में प्रा. डॉ. रमेश कांबळे	81
19.	विकलांगों के प्रकार श्रीमती. लतिका मोहन काटे	85
20.	कथासाहित्य में विकलांगता की आत्मनिर्भरता डॉ.पुष्पा गोविंदराव गायकवाड	88
21.	आधुनिक दौर की देन मनोवैज्ञानिक विकलांगता केंद्रे डी. बी.	91
22.	हिन्दी उपन्यास साहित्य में विकलांग विमर्श (विषेष संदर्भ मृदुला गर्ग, शिवानी) प्रा.डॉ.कुलकर्णी वनिता बाबुराव	96
23.	दिव्यांग पर विजय प्राप्त व्यक्तित्व डॉ. बायजा कोटुळे	100
24.	मालती जोशी के कथा साहित्य में विकलांग विमर्श प्रा.डॉ.पवार आर.एस.	103
25.	विकलांगता : स्वरूप एवं भेद प्रा.डॉ. राजकुमार पंडितराव जाधव	107
26.	जयवंत दलवी के 'बॅरिस्टर' नाटक में स्त्री की विद्रोह मनोवृत्ती प्रा. डॉ. बलवीरचंद्र बा. राजुरकर	111
27.	हिंदी कथासाहित्य में अभिव्यक्त विकलांग संघर्ष वाढेकर रामेश्वर महादेव	113
28.	विकलांगता और मानवी जीवन की स्थिती डॉ. मधुकर राऊत	117
29.	हिंदी उपन्यासों में विकलांगों का जीवन प्रा.डॉ. लहाडे मुरलीधर अच्युतराव	121
30.	विकलांग सुरक्षितता : प्रशासकीय कायदे आणि योजना प्रा.डॉ. तिडके केशव दत्तराव	125
31.	हिंदी साहित्य मे विकलांग विमर्श प्रा. डॉ. मालती धोंडोपंत शिंदे चव्हाण	128
32.	प्रेमचंद युगीन कहानियों मे चित्रित विकलांग विमर्श प्रा.डॉ.भिमराव भाऊराव मानकरे	132
33.	सूअरदान' उपन्यास में अभिव्यक्त विकलांग चरित्र प्रा. डॉ. सुचिता जगन्नाथ गायकवाड	137
34.	लोकगीतों में विकलांग विमर्श डॉ. सय्यद शौकत अली	141
35.	विगलांगों पर तकनीकी विकास का प्रभाव	

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue XX , Vol. II | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648

October 2019 | SJIF | Impact Factor : 7.139

हिन्दी उपन्यास साहित्य में विकलांग विमर्श

(विषेष संदर्भ मृदुला गर्ग, शिवानी)

प्रा.डॉ.कुलकर्णी वनिता बाबुराव

हिन्दी विभागाध्यक्षाए कै.रमेश वरपुडकर महाविद्यालय,सोनपेठए जि.परभणी

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

साहित्य मनुष्य जाती के ज्ञान और अनुभव का लिपिबध्द रूप है। साहित्य साहित्यकार की आत्माभिव्यक्ती तो है ही साथ–साथ सारे समाज की आत्माभिव्यक्ति भी है। साहित्य मनुष्य जाति के ज्ञान और अनुभव का लिपिबध्द रूप है। अपने पास होनेवाली वाक्–शक्ति के सहारे मनुष्य अतित की स्मृतियों, वर्तमान की योजनाओं और भविष्य के स्वप्नों को साहित्य में उतारता है। वाणी का वरदान पाकर मनुष्य प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ हुआ और लिखने की शक्ति पाकर वह देवताओं के समकक्ष जा बैठा रविन्द्रनाथ ठाकुर का कहना है कि, ''हदय का जगत अपने को व्यक्त करने के लिए व्याकुल रहता है। इसलिए चिरकाल से मनुष्य के भीतर साहित्य का वेग है।''1 लेखक की यह आत्मभिव्यक्ति उसे समाज के साथ जोडती है। जैसे – जैसे युग बदलता रहा, ज्ञान और विज्ञान की उन्नति होती रही, वैसे–वैसे साहित्य में कल्पना के स्थाप पर यथार्थ की प्रतिष्ठा होती गई। यह भौतिक जगत नश्वर होने के बावजूद भी महत्वपूर्ण है । जीवन जीने की लिए है और उसकी जीने की सार्थकता उस दूसरे जगत में नही, यही पर इसी ठोस भूमि पर ढूँढती है, इस विचारधारा ने ही पारम्परिक आदर्शवादी धारा को यथार्थवादी धारा के साथ जोड दिया ।

आदिकाल से विकलांग व्यक्तियों ने समाज के लिए व्यापक योगदान दिया है। परन्तु इन व्यक्तियों की ओर किसी का ध्यान नहीं गया । विकलांगता एक तो जन्मजात होती है या दूर्घटना के कारण निर्माण होती है इस विकलांगता या विकलांग विमर्श पर विचार होना अत्यावश्यक है ताकि लोगों को पता चले कि विकलांग भी समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है। इनमें भी वह क्षमता है। जो सामान्य में है और विकलांग व्यक्ति समाज के हर क्षेत्र में रहकर सर्वोच्च कार्य कार्य कर सकता है। मानवीय सभ्यता के आरंभसे ही विकलांगों के प्रति सम्मान, सद्भाव, मानवता, आदर भावों की प्रमुखता रही है। विश्व में जो भी अपहिज है, अंधे, बहरे, लूले, लंगडे वे समाज के घृणा के पात्र नही है बल्कि वे आदर एवं सम्मान के पात्र है। उनके साथ प्रेम भरा मानवता का व्यवहार करना चाहिए ऐसी अपेक्षा समाज से हरके अपाहिज के मन में रहती है। विकलगों ने कभी भी यह नहीं भूलना चाहिए की इस जगत में ऐसी कोई भी वस्तु नहीं है कि जो दोषरहित है। कोई मानसिक रूप से विकलांग होता है तो कोई शारीरिक रूप से महाकवि सूरदास, मलिक मोहमंद जायसी, महर्षि अष्टावक्र, महारानी कैकयी की दासी मंथरा, महाराज कसं ही दासी कुब्जा, महाराज धृतराष्ट्र कुर्मदास, शिष्य एकलव्य, श्रवणकुमार के माता पिता भगवान सूर्य के सारथी अरूण, आदि विकलांग विभुतियॉ विश्वविख्यात हो चुकी है।

भारतीय संस्कृती में मानव जीवन का साफल्य राज्य सुख या स्वर्ग अथवा मोक्ष पा जाने में नही वरन् दारिद्र और अपाहिजों की सेवा में स्वंय हो समर्पित करके उनके कष्टों का निवारण करने में माना गया है । सेवा मार्ग में सबसे बडी बाधा अंह की आती है परन्तु महाराज पृथ्वीराज चौहान और महाराणा

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

सांगा जैसे महान राजाओं ने भी अहं को दूर करते हूए विकलंगों की सेवा की हैं। लोकप्रिय प्रधानमंत्री स्व इंदिरा गांधी जीने अन्तर्राष्ट्रीय विकलांग वर्ष का उद्घाटन करते समय यह घोषणा, की थी कि, ''हम देश में विकलांगो की संख्या जानकर उनके विकास और सुविधाओं के लिए हर संभव प्रयास करेंगे ।'' 2 इस प्रकार विकलांगो की सेवा ही ईश्वर सेवा है। आंरिक संवेदना मनुष्य को विकलांगो के प्रति सचेत करती है। विकलांग के प्रति आत्मियता देश के कुछ प्रतिभा सम्पन्न लेगों के माध्यम से भी समाज तक पहुँचायी जा सकती है। उन्हे। आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रयास करना भी जरूरी है।

विकलांग हमारे समाज का अंग है, मनुष्य चाहे शारीरिक रूप से विकलांग हो अथवा मानसिक रूप से, वह स्वंय निर्दोष है। क्योंकि कैसी भी विकलांगता हो व्यक्ति की स्वंय की त्रुटि या दोष के परिणाम स्वरूप न होकर, कोई भी रोग अथवा दूर्घटना ही है जिससे मनुष्य दुर्बल, कुरूप, अपंग, मंदमति अथवा अक्षम हो सकता है। विकलंगता के लिए व्यक्ति स्वंय उत्तरदायी नही वरन् उस समाज के सामाजिक, आर्थिक कारक विपन्नता, कुपोषण, हीन आर्थिक स्थिती, बेरोजगारी आदि के कारण बालक किशोर, युवा प्रौढ, वृध्द विकलंगता से ग्रसित हो जाते हैं। विकलांगता एक ऐसी अवस्था है जिसमें मनुष्य जीते हुए भी मरता रहता है, विकलांगता चाहे शारिरिक हो या मानसिक जो भी हो वह मानव जीवन को अत्यंत दुश्वार बना देती है। इनमें से कुछ जन्म से ही किस्मत के मारे होते है तो कुछ दुर्घटना के शिकार है। बहरापन, गुँगापन, अंधापन, लंगडापन आदि कुछ ऐसी विकृतियॉ है । जिनसे मनुष्य को सामान्य जीवन जीने में परेशानी होती हैं।

कठगुलाब – मृदुला गर्ग

मृदुला गर्गजी द्वारा रचित उपन्यास 'कठगुलाब' पॉच भागों मे विभाजित है। यह उपन्यास उत्तर आधुनिकता से जुडा हुआ है। इस उपन्यास में अन्तर्मन को मथ देनेवाली मानवीय पीडा है, जो पाडकों को पीडित किए बीना नहीं रहती इस उपन्यास में प्रतिशोध और विद्रोह में खडी नारियों का चित्रण है। मृदुला गर्ग ने स्वंय कहा है – ''सब तरह की ऐतिहासिकता राजनैतिक, और व्यावसायिक उठापटक से उत्पन्न वैश्विकरण, भूमंडलीकरण और यांत्रिकता का मूल प्रभाव हम पर यह हुआ कि हमारी भूमि और भावभूमि दोनों बंजर होती जा रही है इसी सच की चुनौती मे मुझसे कठगुलाब लिखवाया है'' ।3 इस उपन्यास में नारी अस्मिता के अहम सवालों को खडा किया गया है । इस उपन्यास की नायिका स्मिता अपनी नमजोर ऑखो की वजह से विकलांग है। अनाथ स्मिता अपनी बनह नमिता के घर रहती है। वह जीजा की बूरी दृष्टि से नही बच पाती। वह स्मिता के साथ अश्लिल व्यवहार करता है। स्मिता उसका विरोध कर फटकारती है। तब वह उस पर अभियोग लगाते नमिता को बताता है, कहती है कि, रूपये दो नही तो बदनाम कर दूँगी। नमिता रसोई से आते ही उसके माथे पर कौचा मारती है। जिससे स्मिता का चश्मा टूट जाता है। स्मिता के संदर्भ में इन्दु प्रकाश पाडैंय जी ने कहा है, ''बिना चश्में के वह अन्धी सी है, क्योंकि उसकी ऑखे बहुत कमजोर है'' ।4 । स्मिता घर छोडकर जाने के विचार से अपनी सहेली असीमा के पास जाकर पैसों का प्रबंध करती है। चश्मा बनाने तक दो दिन के लिए उसे वही रूकना पडता है। इसी बीच नर पिशाच जीजा उस पर बलात्कार करता है। चश्मा न होने से वह ठिक तरह देख भी नही पाती। प्रतिशोध की अग्नी में जलती हुई स्मिता घर छोडकर कानपुर चली जाती हैं। वह

College Sangam Late Ramesh Warpudkar (ACS) Dist. Parbhani

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue XX , Vol. II | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Octomber 2019 | SJIF | Impact Factor : 7.139

अमेरिका जाकर समृध्द बनना चाहती है। स्मिता कमजोर ऑखो की वजह से विकलांग चरित्र है। कुर दुष्कर्म का बदला लेना चाहती है। स्मिता पारिवारिक सामाजिक स्तर पर मन से टुटा हुआ चारित्र है।

उसके हिस्सें की धुप – मृदुला गर्ग –

मृदुला गर्ग जी ने इस उपन्यास में परपरागत भारतीय समाज के स्त्री–पुरूष सम्बध्यों का चित्रण किया है। लेखिकाने नारी स्वातंत्र्य को महत्व दिया है। डॉ हेमलता कांचनवार ने इस उपन्यास के संदर्भ में कहा है –''यह उपन्यास मानव मन की संवेदना ''मैने जो कुछ करना चाहा किया'' को उजागर करता है ''। 5 यह उपन्यास सवाल उठाता है कि स्त्री – पुरूष सम्बन्धों का आधार क्या है – प्रेम या स्वतंत्रता ? यह उपन्यास विचारों की प्रगल्भता के कारण पाठको को मुग्ध कर देता है। इस उपन्यास में शारिरिक रूप से विकलांग नवयुवक का चित्रण अंकित है। वह कॉलेज में पढनेवाला युवक है। पोलियों के कारण उसके दोनो हाथ नाकाम हुए है । वह लिख नही पाता इसलिए एक लेखक उसके साथ नियुक्त किया जाता है । लेकिन वह लेखक क–ख–ग भी नही जानता इन्वीजिलेटर उस विकलांग लडके को ज्यादा समय दने के लिए विरोध करता है। उसका अध्यापक मधुकर बहुत चिढ जाता है। वाईसचान्सलर भी अर्थशास्त्र के विद्यार्थी को लेखक बनाने कि लिए विरोध करता है। मधुकर घुस्से से लाल होकर दयाभाव जताता है। ''लडका बेचार विकलांग है, आत्मबल के भरोसे किसी तरह पढ रहा है, उसकी मदद करने से रहे बैठे.बैठे कानून निकल रहे है'' ।6

अनित्य – मृदुला गर्ग

मृदुला गर्ग द्वारा रचित उपन्यास में स्वतंत्रता आंदोलन की व्यापक पृष्ठभूमी प्रस्तुत करते हुए स्वातंत्र्योत्तर काल की राजनितिक विसंगतियों पर प्रकाश डालता है। पुंजीवादी अंग्रेजो ने जाते समय सत्ता अपने उत्तराधिकारियों पूँजीवादियों के हाथ में सौंप दी थी। परिणामतः आजादी मिलने के बाद भी पूँजीवाद और अवसरवाद की जडे उखडी नही, और भी गहरी हो गयी। समझौते की मानसिकता ने आम लोगों को दुविधा जड बना दिया दूसरी और इन उत्तराधिकारियों ने इतिहास को भी विकृत रूप में प्रस्तुत किया है।

इस उपन्यास में श्यामा थोंब्रोसिस की बीमारी से विकलांग होकर बिस्तर पर पडी रहती है वह न चल सकती है और न कुछ कर सकती है बीमारी के पूर्व लखनउ की सबसे खूबसूरत लडकी के रूप में जानी जाती थी स्कुल जाते समय उसे देखने के लिए फाटक पर लडको की भीड लगी रहती थी। काजल की कुरूपता के कारण काजल को नकारनेवाला अविवाहित श्यामा से शादी करता है। वह कुछ ही दिनों में तीन लडकियॉ और एक लडके की मॉ बन जाती है। ''खोखी के जनम के बाद श्यामा के पैर में थोब्रोसिस हो गया था । जिसके कारण छह महिने तक बिस्तर पर पडी रही। परंतु उपन्यास में वह बीमार ही है, न चल सकती है न घूम सकती है'' ।7 वह सामंतवाद को जिंदा रखना चाहती है। वह अपनी खुद की दुनिया में मस्त है। दुःख चे चिंतित नही है। उसकी बीमारी के कारण घर का माहोल शांत रहना है। वह सोंचती है उसके लिए सभी है। वह किसी के लिए नही है। संगीत उसका मन बहलाने को है। स्वंय रोकर सामनेवाले को रूलाना उसकी आदत है। ''श्यामा ऑख बंद किय पडी है, चेहरे पर मुग्ध शांति का भाव है ।'' निष्कियता में आनंद ले पाना हर किसी के बस की बात नही है।

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue XX , Vol. II | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Octomber 2019 | SJIF | Impact Factor : 7.139

जब संगीत गाना सुनाती थी तब भी ऐसा सम्मोहित शांति भाव श्यामा के चेहरे पर छाया रहता था।''8। वह पति को माता के रूप में मानती है, परंतु विवाह के कुछ ही दिनों के बाद एक दुसरे से असंतुष्ट रहने लगते है। उसका वैवाहिक जीवन दिखावा मात्र रह जाता है। सिर्फ शारीरिक सुंदरता पति–पत्नी को निकट पही ला सकती फिर भी श्यामा वैवाहित जीवन को निभाती रहती है। वह बुर्जुआ मानसिकता की स्त्री है । वह दुःख से अपरिचित है । दिखने में सुंदर है। उसे अपनी विकलांगता का गम नही है।

कृष्णकली – शिवानी –

लेखिका शिवानी जी द्वारा रचित कृष्णकली उपन्यास में एक अपरूप सुन्दरी की अभाग्यपूर्ण दुःख भरी कथा है पिता के अभाव में उदण्ड और हठीली स्त्री को व्यक्त किया है। जो संसाररूपी जल प्रवाह के किनारे खडी प्यार की एक बूँद के लिए जिंदगी भर तरसती रहती है। इसकी कथा में कुष्ठरोगियों की जीवन दशा अत्यंत सुक्ष्मता से विवेचन किया है। यह एक ब्रहद उपन्यास है। उपन्यास में अनेक कथाएँ बिखरी पडी है। डॉ कृष्ण श्रीवास्तवजी ने प्रस्तुत उपन्यास की कली के संदर्भ में कहा हैं – ''कृष्णकली'' एक अपरूप सुन्दरी की अभाग्यपूर्ण दुःख कथा है ।9

कृष्णकली की पार्वती कुष्ठरोग से पिडित है वह अपरूप सुन्दरी कृष्णकली की माता है। पैदा होते ही अपनी बच्ची का गला घोट देना चाहती है, परतु कुष्ठाश्रम की डॉ पैट्रिक ने उस नवजात बेहोश बच्ची को होश में लाकर मातृ सुख से वंचित पन्ना की गोद में डाल दिया था । शिवानी ने कृष्णकली का वर्णन इस प्रकार किया है – ''नाक देखती नहीं, कैसी खडग की सी धार धरी है । होठ ! आहा, क्या मनोहारी गठन है। यह ललाट, काले चिकने, घने केश और नौरत्ती बावन तोले की ये वनमृगी – सी ऑखे ।10 '' कृष्णकली को माता पिता दोनों कुष्ठ रोगी थे । उपन्यास की रोजी का वक्तव्य – ''अभागिनी को रोग ने पंगु ही नही तो अंन्धी भी बना दिया था ।''11 वह स्वंय की बच्ची को जन्मते ही पन्ना की गोद में देकर पूरा जीवन कुष्ठाश्रम में ही बिताती है। कुष्ठरोग से पिडित विकलांग चरित्र अपने आप में परेशान नजर आते है वे आत्मकुंठित चरित्र है ।

मायापुरी – शिवानी

हिन्दी साहित्य की जानी – मानी लेखिका शिवानी द्वारा रचित उपन्यास 'मायापुरी' में अपुर्व सौंदर्यमयी पहाडी कन्या शोभा के संघर्षमय जीवन की कथा है । लेखिका सिध्द करना चाहती है कि वर्तमान आधुनिक भौतिक युग में धन की ही शक्ति महान है, किन्तु यदि मानव चाहे तो वह आत्मिक शान्ति को धन के बल पर खरीद नही सकता । इस उपन्यास में एक कर्तव्यमयी भाउक और आकर्षक व्यक्तित्व की पहलुओं को उजागर किया है ।इस उपन्यास में सतिष नामक युवक को चित्रित किया है उपन्यास का कथानायक लखनउवासी सतीष आकर्षक व्यक्तित्व और प्रभावशाली नवयुवक है'' सविता तिवारीजी की पुत्री है जो केंन्द्र में मंत्री है । सतिष जैसे गौर वर्ण मुखश्री और प्रशान्त ललाट वाले सुवर्णपदक विजेता के लिए तिवारी जीने अपनी पुत्री की बोली लगायी थी । किसी समय सविता दुबली – पतली लडकी थी किन्तु सगाई के समय मासांधिक्य के कारण वह आवश्यकता से अधिक पुष्ट हो गयी थी ।'' 12 राजदुत तिववारी अपनी पुत्री सविता का रिश्ता पक्का करते है । उच्च शिक्षा हेतु उसे विदेश भेजा जाता है । वह अपनी मॉ के कठोर अनुशासन में पला हुआ युवक है । इसलिए अपने जीवन के ठोस निर्णय लेने में समर्थ है । वह शोभा नामक युवती को चाहता है लेकिन धन के अभाव के कारण

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 7.139

व सतीष की नही हो पाती भीरू व्यक्तित्व का सतीष अपनी माता– पिता की अवहेलना कर शोभा से ब्याह करने में असमर्थ रहता है वह चरित्रहीन स्थुलांगी पत्नी सविता से अप्रसन्न रहता है । एक विमान दुर्घटना में शारीरिक रूप से विकलांग हो जाता है । सतीष के संदर्भ में डॉ कृष्णा श्रीवास्तवजी ने कहा है "अन्त में एक विमान दुर्घटना में सतीष के दोनों पैर कुचल जाते है एवं कुछ दिन पश्चात उसकी मृत्यु हो जाती है ।"13 सतीष परिवार और शारीरिक पीडा से टूटा हुआ चरित्र है ।

निष्कर्ष

प्राचिन काल से लेकर आज तक विकलांग चारित्रों का सुजन साहित्यकारों ने अपने उपन्यास में किया है साहित्यकारों ने विकलंग चारित्रों को महत्व देकर उनकी विभिन्न समस्याओं को उजागर करनेवाली अनेक रचनाएँ लिखी है साहित्यकारों ने विकलांग चरित्रों के प्रति अपनत्व का भाव रखा है उनकी पिडा को व्यक्त किया । साथही विकलांग चरित्रों की अंतःपीडा को भी प्रस्तुत किया है । विकलांगता के बावजुद भी अनेक विकलांग चरित्र आत्मनिर्भर है ।

संदर्भ :–

1. काव्यशास्त्र – डॉ भगीरथ मिश्र – पृ 37
2. अपंग जिनसे दुनिया दंग – हरिकृष्ण तेलगं – पृ 09
3. चुकते नही सवाल – मृदुला गर्ग – पृ 156
4. हिन्दी के अधुनातन नारी उपन्यास – डॉ इंन्दु प्रकाश पांण्डे – पृ 139
5. बीसवी सदी के अंतिम दशक के महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में पुरूष चरिच – डॉ हेमलता कांचनकर पृ 148
6. उसके हिस्से की धुप – मृदुला गर्ग – पृ 191
7. मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में नारी – डॉ रमा नवले – पृ. 177
8. अनित्य – मृदुला गर्ग – पृ 139
9. कथाकार शिवानी व्यक्तित्व और कृतित – डॉ कृष्णा श्रीवास्तव – पृ 32
10. भैरवी – शिवानी – पृ 53
11. कृष्णकली – शिवानी – पृ 62
12. शिवानी के उपन्यासों में नारी – डॉ रोहिणी वांगीकर (आसरडोहकर) – पृ 92
13. कथाकार शिवानी – व्यक्तित्व और कृतित्व – डॉ कृष्णा श्रीवास्तव – पृ 29

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani